

मसूर-मेंथा, मटर-मेंथा।

अन्न की फसलों पर आधारित फसल चक्र-मक्का-गेहूँ, धान-गेहूँ, ज्वार-गेहूँ, बाजरा-गेहूँ, गन्ना-गेहूँ, धान-गन्ना-पेड़ी, मक्का-जौ, धान-बरसीम, चना-गेहूँ, मक्का-उर्द-गेहूँ, सब्जी आधारित फसल चक्र-भिण्डी-मटर, पालक-टमाटर, फूलगोभी+मूली - बन्दगोभी + मूली, बैंगन+लौकी, टिण्डा-आलू-मूली, करेला, भिण्डी - मूली - गोभी - तरोई, घुईयां-शलजम-भिण्डी-गाजर, धान-आलू-टमाटर, धान-लहसुन-मिर्च, धान-आलू+लौकी इत्यादि हैं।

किसी खेत में लगातार एक ही फसल उगाने के कारण कम उपज प्राप्त होती है तथा भूमि की उर्वरता खराब होती है। फसल चक्र से मृदा उर्वरता बढ़ती है, भूमि में कार्बन-नाइट्रोजन के अनुपात में वृद्धि होती है। भूमि के पी.एच. तथा क्षारीयता में सुधार होता है। भूमि की संरचना में सुधार होता है। मृदा क्षरण की रोकथाम होती है।

फसलों का बिमारियों से बचाव होता है, कीटों का नियन्त्रण होता है, खरपतवारों की रोकथाम होती है, वर्ष भर आय प्राप्त होती रहती है, भूमि में विषाक्त पदार्थ एकत्र नहीं होने पाते हैं। उर्वरक - अवशेषों का पूर्ण उपयोग हो जाता है सीमित सिंचाई सुविधा का समुचित उपयोग हो जाता है।



कृपया अधिक जानकारी हेतु किसान कॉल सेंटर के निःशुल्क टॉल फ्री नं. 1800-180-1551 पर अथवा दूरभाष संख्या 0522-4155999 पर सम्पर्क करें।

विशेष जानकारी हेतु अपने क्षेत्र के कृषि विभाग के स्थानीय अधिकारी/कर्मचारी या विभाग की वेबसाइट www.agriculture.up.nic.in पर सम्पर्क करें।

प्रकाशक : प्रसार शिक्षा एवं प्रशिक्षण ब्यूरो, कृषि विभाग, 9, विश्वविद्यालय मार्ग, लखनऊ

फसल चक्रका महत्व एवं लाभ



कृषि विभाग
उत्तर प्रदेश, लखनऊ

फसल चक्र का महत्व एवं लाभ

उपजाऊ भूमि का क्षरण, जीवांश की माता में कमी, भूमि से लाभदायक सूक्ष्म जीवों की कमी, मित्र जीवों की संख्या में कमी, हानिकारक कीट पतंगों का बढ़ाव, खरपतवार की समस्या में बढ़ोत्तरी, जलधारण क्षमता में कमी, भूमि के भौतिक, रासायनिक गुणों में परिवर्तन, क्षारीयता में बढ़ोत्तरी, भूमिगत जल का प्रदूषण, कीटनाशीयों का अधिक प्रयोग तथा नाशीजीवों में उनके प्रति प्रतिरोधक क्षमता का विकास, हमारे प्रदेश की सबसे लोकप्रिय फसल उत्पादक प्रणाली धान-गेहूँ, मृदा-उर्वरता के टिकाऊपन के खतरे का स्पष्ट आभास कराती प्रतीत हो रही है।

आज न तो केवल उत्पाद वृद्धि रुक गयी है बल्कि एक निश्चित मात्रा में उत्पादन प्राप्त करने के लिए पहले की अपेक्षा न बहुत अधिक मात्रा में उर्वरकों का प्रयोग करना पड़ रहा है क्योंकि भूमि में उर्वरक क्षमता उपयोग का ह्रास बढ़ गया है। इन सब विनाशकारी अनुभवों से बचने के लिए हमें फसल चक्र, फसल सघनता, के सिद्धान्तों को दृष्टिगत रखते हुए फसल चक्र में दलहनी फसलों का समावेश जरूरी हो जायेगा क्योंकि दलहनी फसलों से एक टिकाऊ फसल उत्पादन प्रक्रिया विकसित होती है।

अधिक मूल्यवान फसलों के साथ चुने गये फसल चक्रों में मुख्य दलहनी फसलें, चना, मटर, मसूर, अरहर, उर्द, मूँग, लोबिया, राजमा, आदि का समावेश जरूरी हो गया है। आदिकाल से ही मानव अपने भरण पोषण हेतु अनेक प्रकार की फसलें उगाता चला आ रहा है। जो फसलें मौसम के अनुसार भिन्न-भिन्न होती हैं।

सभ्यता के प्रारम्भ से ही किसी खेत में एक निश्चित फसल न उगाकर फसलों को अदल-बदल कर उगाने की परम्परा चली आ रही है। फसल उत्पादन की इसी परंपरा को फसल चक्र कहते हैं अर्थात्

किसी निश्चित क्षेत्र पर निश्चित अवधि के लिए भूमि की उर्वरता को बनाये रखने के उद्देश्य से फसलों को अदल-बदल कर उगाने की क्रिया को फसल चक्र कहते हैं।

अथवा किसी निश्चित क्षेत्र में एक नियत अवधि में फसलों को इस क्रम में उगाया जाना कि उर्वरा शक्ति का कम से कम ह्रास हो फसल चक्र कहलाता है। फसल चक्र के निर्धारण में कुछ मूलभूत सिद्धान्तों को ध्यान में रखना जरूरी होता है जैसे अधिक खाद चाहने वाली फसलों के बाद कम खाद चाहने वाली फसलों का उत्पादन अधिक पानी चाहने वाली फसल के बाद कम पानी चाहने वाली फसल।

अधिक निराई गुड़ाई चाहने वाली फसल के बाद कम निराई गुड़ाई चाहने वाली फसल दलहनी फसलों के बाद अहदलनी फसलों का उत्पान अधिक मात्रा में पोषक तत्व शोषण करने वाली फसल के बाद खेत को परती रखना, एक ही नाशी जीवों से प्रभावित होने वाली फसलों को लगातार नहीं उगाना, फसलों का समावेश स्थानीय बाजार की माँग के अनुरूप रखना चाहिए।

फसल का समावेश जलवायु तथा किसान की आर्थिक क्षमता के अनुरूप करना चाहिए। उथली जड़ वाली फसल के बाद गहरी जड़ वाली फसल को उगाना चाहिए उत्तर प्रदेश में कुछ प्रचलित फसल चक्र इस प्रकार हैं जैसे परती पर आधारित फसल चक्र है परती-गेहूँ, परती-आलू, परती-सरसों, धान-परती, हैं हरी खाद पर आधारित फसल चक्र इसमें फसल उगाने के लिए हरी खाद का प्रयोग किया जाता है।

जैसे हरी खाद - गेहूँ, हरी खाद-धान, हरी खाद-केला, हरी खाद-आलू, हरी खाद-गन्ना, आदि दलहनी फसलों पर आधारित फसल चक्र-मूँग-गेहूँ, धान-चना, कपास-मटर-गेहूँ, ज्वार-चना, बाजरा-चना, मूँगफली-अरहर, मूँग-गेहूँ, धान-चना, कपास-मटर-गेहूँ, ज्वार-चना, बाजरा-चना, धान-मटर, धान-मटर-गन्ना, मूँगफली-अरहर-गन्ना,